***За всепланетного кочегара!..***

[***Ергений Разин***](http://www.stihi.ru/avtor/ergrazin1)

***Сжимает тромб   
            артерии планеты:  
Земному Шару быть бы молодым,  
Но жизнь беспутную   
                 зовёт уже к ответу  
Жить приказавший долго   
                     кочегар Гольфстрим...  
  
Спасали Рим цветущий   
                   гуси древней ранью -  
Патриции! Га-га!   
               Идёт большой звездец!  
Ага, Гольфстрим   
              покрылся чёрной дрянью:  
ОПЕК сияет рожей - молодец...  
  
Глупей счастливой морды олигарха,  
Который ходит   
            всепланетно под себя,  
Нет ничего с позиций планетархов, -  
Всё видишь ТЫ,   
            создательно скорбя...  
  
Для этих хряков   
              рай земной творился?  
В трубопроводный и бурильный визг  
Он вместе с тазом   
                медным провалился,  
Старик Гольфстрим,   
                отравленный в дым-дрызг...  
  
Успеть спасти планету от инсульта  
И разогреть   
          огнём сердец   
                     Гольфстрим -  
Задача дня:   
         молиться всем   
                     за пультом!  
Быть может   
         чудо-юдо победим?...  
  
Из катапульт   
           презреньем - в олигархов!  
В консервных банках   
                  спеси запаять  
И закопать под задом планетарха,  
Чтоб никогда   
           их мир не видел, ....ь!..  
  
           Е.  
       05-12-2014  
           Р.***

***© Copyright: [Ергений Разин](http://www.stihi.ru/avtor/ergrazin1), 2014  
Свидетельство о публикации №114120510041***

[**http://www.stihi.ru/2014/12/05/10041**](http://www.stihi.ru/2014/12/05/10041)